॥ अथ श्रीसीताष्टक प्रारम्भः ॥

॥ कुण्डलिया ॥

सीता इष्ट उपासना, सीता ज्ञान विचार ।
सीता भक्ति सुभावना, सीता पद सुखसार ॥
सीता पद सुखसार, परम हितु सीता मेरी ।
शरण पाल सर्बज्ञ, शक्ति सब शक्तिनि केरी ॥
लायक परम कृपाल, दुखनि ते करै अभीता ।
प्रेमलता गुण खानि, जानि श्रीस्वामिनि सीता ॥१॥
सीता जप तप योग ब्रत, सीता तीरथ त्याग ।
सीता धर्म सुकर्म सिय, दान ध्यान बैराग ॥
दान ध्यान बैराग, परम सुख लाभ सुहाई ।
सम्पति घर पितु मातु, सुजन प्रिय परिजन भाई ॥
जाति पाँति परिवार, सहायक सुहृद पुनीता ।
प्रेमलतहिं अवलम्ब, सकल विधि स्वामिनि सीता ॥२॥
सीता पूजा पाठ मम, सम दम श्रद्धाधाम ।
सीता श्रवण सु मनन सिय, समाधान विश्राम ॥

समाधान विश्राम, धारणा अचल समाधी ।
अहंकार उपराम, तितिक्षा बुद्धि अबाधी ॥
भजन बिबेक विचार, लोक पर लोक प्रतीता ।
प्रेमलता बल भाग, एक श्रीस्वामिनि सीता ॥ ३ ॥
सीता क्षमा सुसील शुचि, सीता धीरज प्रेम ।
सीता प्रीति प्रतीति गति, सीता सुमति सु छेम ॥
सीता सुमति सुछेम, मोद मङ्गल थल सोई ।
सीता सर्ब उपास्य, देवता असनहिं कोई ॥
बिद्या विनय बिलास, नम्रता मुद मन चीता ।
प्रेमलता नव निद्धि, ऋद्धि शिधि विधि सबु सीता॥४॥
सीता नेम उछाह ध्रुव, भुक्ति मुक्ति गुरु भूप ।
सीता परमानन्द पर, नाम धाम गुण रूप ॥
नाम धाम गुण रूप, सुकीरति सरल सुहावन ।
सर्ब सुकृत फल फूल, मूल सीता पदपावन ॥
सीता नाम अनूप, अमीरस सज्जन पीता ।
प्रेमलता निशि दिवस, रटै मुख सीता सीता ॥ ५ ॥
सीता प्राण अधार धन, आश बास विश्वास ।

सीता यजन सुतोष प्रण, सीता हर्ष हुलाश ॥
सीता हर्ष हुलाश, जहाँ लगि सुखद सु जेते ।
रहस राग रस रंग, संग शुभ सिय जू तेते ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति, तुरिय अनुभव के मीता ।
प्रेमलता सब मोर, एक श्री स्वामिनि सीता ॥ ६ ॥
सीता बेद पुराण मत, सीता यामल भास ।
सीता ज्योतिष संहिता, रामायण इतिहास ॥
रामायण इतिहास, मनू जो सुस्मृति बखानी ।
अस्तव नाटक रहस, काण्ड त्रय सिय जिय जानी ॥
सारस्वत व्याकर्ण, कौमुदी भगवत गीता ।
प्रेमलता षठ शास्त्र, न्याय बेदान्त सु सीता ॥ ७ ॥
सीता रामहिं प्राण प्रिय, सीताराम अधार ।
सीता बिनु तिष्टें नहीं, राम न नाम उदार ॥
राम न नाम उदार, उभय सीता अनुगामी ।
यह मत परम सु गूढ़, लखैं कोउ संत अकामी ॥
सिय सेवत बश होत, राम भगवान अजीता ।
प्रेमलता अस जानि, जपहिं जन नाम सु सीता ॥ ८ ॥

सीता अष्टक पाठ नित, करै कपट तजि कोय।
उपजै सीताराम पद, परम प्रेम सुख होय॥
परम प्रेम सुख होय, जगत की नशै दुराशा।
बिनु श्रम भव निधि तरै, सीय पुर पावै बासा॥
महा मंत्र सिय नाम, राम रूपहिं बश कीता।
प्रेमलता गुरु तत्व, लखावहिं नाम सु सीता॥ ६॥

॥ दोहा ॥

सीता अष्टक कष्ट हर, प्रेमलता मति दीन॥
सीतासर तट बैठि सुख, मिथिला पुर महँ कीन॥१॥

इति श्री सीताष्टक श्री अनन्त श्री स्वामी श्री राम
वल्लभा शरण जी महाराज श्री अवध श्री
सतगुरु सदन निवासी जू के कृपा-
पात्र श्री सियालाल शरण
जी महाराज कृत
समाप्त शुभम्।